"बनफूल" की कहानियाँ

21 - 40

हिन्दी अनुवाद: जयदीप शेखर

“बनफूल” की कहानियाँ

बँगला लघुकथाओं का हिन्दी अनुवाद

21 - 40

लेखक

“बनफूल”

अनुवादक

जयदीप शेखर

जगप्रभा

jagprabha.in

Cover Photo: Portrait of Banaphool (Oil Painting)
Artist: Rintu Roy
(Courtesy: Bengali newspaper 'Pratidin')

eBook

Banphool ki Kahaniyan: Stories of Banphool
Collection of 20 short stories in Hindi (21 to 40) translated from Bengali.
Original Author: ''Banaphool''
(Balai Chand Mukhopadhyay)
Hindi Translation: Jaydeep Das
(Pen Name: Jaydeep Shekhar)
Copyright © 2022 Translator
All rights reserved
Available at: jagprabha.in

"बनफूल"

(1899 - 1979)

बँगला साहित्य के सुप्रसिद्ध कथाकार "बनफूल" (बालाय चाँद मुखोपाध्याय) का रचना-संसार यूँ तो बहुत विशाल है- 14 नाटक, 60 उपन्यास, 586 कहानियाँ, हजारों कविताएं, अनगिनत लेख, कई एकांकियाँ और एक आत्मकथा; लेकिन वे जाने जाते हैं अपनी पेज भर लम्बी सरस, चुटीली कहानियों के कारण, जो विस्मय के साथ समाप्त होती हैं- जैसे कि एक अच्छा शेर। ऐसे शब्दचित्रों को अँग्रेजी में 'विनेट' (Vignettes) अर्थात् 'बेलबूटे' कहा जाता है।

विलक्षण प्रतिभा के धनी इस कथाकार के नाम से हिन्दीभाषी साहित्यरसिक कम परिचित हैं, क्योंकि उनकी रचनाओं का हिन्दी अनुवाद बहुत कम हुआ है- नहीं के बराबर।

प्रस्तुत हिन्दी अनुवादों में बहुत स्थानों पर "बनफूल" द्वारा प्रयुक्त संस्कृतनिष्ठ शब्दों को ज्यों-के-त्यों रहने दिया गया है, ताकि उनकी शैली के बारे में अनुमान लगाया जा सके।

***

कहानियाँ

21. बेचारामबाबू 6
22. लव-मैरिज 8
23. तर्क और सपना 11
24. चलचित्र 13
25. जुड़वाँ सपना 17
26. अन्दर व बाहर 20
27. सुलेखा का रोना 24
28. परीकथा 28
29. त्रिगुणानन्द बाबू 29
30. खड़ाऊँ का मारा 37
31. पास-पास 41
32. विद्यासागर 46
33. पाठक की मृत्यु 49
34. दत्त महाशय 52
35. मिस्टर मुखर्जी 58
36. फेरीवाला 62
37. भांग का लड्डू 65
38. कालू 71
39. भोम्बल भैया 76
40. मक्खीचूस 81

21. बेचारामबाबू

(बेचारामबाबू)

हरीश बनिया शाम को हिसाब समझा कर गया कि पिछले महीने का उधार 27 रुपये 5 आना हो गये हैं और उसे अबिलम्ब चुकता करना जरूरी है। सद्य-ऑफिस-प्रत्यागत बेचारामबाबू बोले, "ठीक है, वेतन मिलते ही- ।"

इसके बाद कपड़े बदलकर बाहर बरामदे में बैठकर उन्होंने हाँक लगाई, "अरे सुनो... चाय ले आना।" चाय आयी। चाय आते ही पड़ोस के हरिबाबू, नवीण राय, विधू क्लर्क-जैसे चार-पाँच सज्जन भी आ जुटे और चाय-पान के साथ गपशप भी चलने लगी।

बातचीत चल रही थी। ऐसे में बेचारामबाबू की छोटी बेटी पूँटी हाजिर हुई, "बाबा, आज डाक से दो चिट्ठियाँ आयी है। लाऊँ?"

पूँटी की छोटी बहन टूनी भी साथ आयी थी। वह बोली, "मैं लाऊँ बाबा?" बेचारामबाबू ने फैसला कर दिया, "अच्छा, दोनों एक-एक ले आओ।"

श्रीयुत् बेचाराम बक्शी की पाँच पुत्रियाँ और दो पुत्र हैं।

पूँटी और टूनी दोनों एक-एक पत्र लेकर आयीं। पहला पत्र बेचारामबाबू के प्रवासी पुत्र ने बहरमपुर से लिखा था- उसे कॉलेज फी, हॉस्टल चार्ज वगैरह मिलाकर पचपन रुपये चाहिए। दूसरा पत्र उसकी बड़ी बेटी ने ससुराल से लिखा था कि पिछले साल पूजा में अच्छे उपहार न भेजवाने के कारण उसे काफी खरी-खोटी सुननी पड़ी थी, सो इस बार पूजा में उपहार भेजवाने में कँजूसी न की जाय, वरना ससुराल में रहना दूभर हो जायेगा।

गहरी साँस छोड़कर बेचारामबाबू ने दोनों पत्र जेब में डाल लिये।

फिर गपशप शुरू हुई। नवीन राय ने एक पान मुँह में दबाकर कहा, "तुम्हारी मँझली लड़की के लिए कुछ कर रहे हो कि नहीं? अब तो उसकी शादी कर ही डालो।"

बेचाराम बोले, "एक पात्र देखो ना!"

इसके उत्तर में नवीन ने कहा, "पात्र एक है। माँग भी कुछ खास नहीं है। पाँच सौ एक नकद, तैंतीस भरी सोना और वर के कपड़े आदि। आजकल के जमाने में यह कोइ ज्यादा भी नहीं है।"

पसीना पोंछकर बेचाराम ने उत्तर दिया, "सो तो है।"

थोड़ी देर में सभा टूटी। बेचारामबाबू अन्दर गये। अन्दर भोजन के लिए बैठते ही स्त्री हरिमती पास आकर बैठ गयीं और इधर-उधर की बातों के बाद बोली, "विनोद के मार्फत मासी माँ ने खबर भेजवायी है कि वे कल आ रहीं हैं। थोड़े अरवा चावल मँगवा लेना और सेरभर दूध कल से तय कर देना। वे अफीम खाती हैं, जानते ही हो।"

सोने के लिए गये, तो देखा, बच्चे नीन्द से जागकर रो रहे हैं। पूछे, "क्या हुआ इन्हें..."

स्त्री बोली, "होगा क्या... ठण्ड पड़ गयी है, किसी के शरीर पर ढंग के कपड़े नहीं हैं। रजाई भी उधड़ गयी है। पाँच साल पहले की बनवायी हुई है, फटेगी नही! तुम्हें तो बोल-बोल कर हार गयी हूँ। क्या करूँ मैं बताओ!"

बेचाराम इसपर कुछ नहीं बोले। सिर्फ टेबल के ऊपर रोशनी की ओर देखते रहे। जलते-जलते मोमबत्ती करीब समाप्त हो चली थी।

***

22. लव-मैरिज

(अनिर्वचनीय)

क्षणिका खास्तगीर के सर पर वज्रपात हुआ है। अभी तक वह मरी तो नहीं है, लेकिन इस अवस्था में मरना उचित है कि नहीं, और उचित होने पर सहज एवं मर्मान्तिक मृत्यु का उपाय क्या है- यही अच्छी तरह विचारने के लिए वह छत पर चहलकदमी कर रही थी। किरासन तेल, गले में रस्सी, तालाब में डूबना, यहाँ तक कि cyanide भी मामूली हो गया है। यक्ष्मा का जीवाणु सूँघना कैसा रहेगा?

अचानक पीछे से रमेशबाबू की चप्पलों की आवाज।

"क्षुणू, तुम यहाँ हो? कमाल है! अच्छा, यह क्या बचपना है बताओ तो तुम?"

क्षणिका ने कुछ नहीं कहा।

रमेशबाबू ने कहा, "कुछ कहती क्यों नहीं? मैं क्या अभी ही तुम्हारी शादी उससे किये दे रहा हूँ? एकबार सोचकर देखने में हर्ज क्या है?"

क्षणिका ने कहा, "पिताजी, आप आखिरकार मुझे एक विधुर के हाथों सौंप देंगे- यह तो मैं सोच भी नहीं सकती।"

रमेशबाबू ने कहा, "अच्छी बात है, मत करो उससे शादी। मुझे लड़का अच्छा लगा, इसलिए मैं कह रहा था। विद्वान है, बड़ी नौकरी करता है, स्वास्थ्यवान है, बच्चे हैं नहीं। दूसरी शादी होने से क्या हुआ? ठीक है बेटे, तुम्हें पसन्द नहीं है, तो मत करो उससे शादी। चलो, अब सो जाओ। तुमलोगों ने पढ़ाई करके अपने टौन्सिल बढ़ाये हैं, बुद्धि नहीं बढ़ी कुछ।"

मातृभावापन्न रमेशबाबू अपनी मातृहीन कन्या को लेकर नीचे उतर गये।

बताना भूल गया- पहले ही बताना उचित था- क्षणिका खास्तगीर ने अँग्रेजी में 'ऑनर्स' के साथ बी.ए. पास किया है। एक प्रमुख मासिक पत्रिका में उसकी तस्वीर छप चुकी है।

क्षणिका ने अगले दिन बान्धवी सुजाता को बताया, "चलो बला टली। उस आदमी के अक्ल की मैं दाद देती हूँ। पत्नी के मरते ही शादी की जल्दी पड़ गयी है। पुरूषों ने तो हमें सिगरेट ही बना डाला है। एक के बुझते-न बुझते दूसरा जला लेना है। ये सज्जन तो और भी जल्दबाज हैं। मानो पहली पत्नी की चिता की आग से ही दूसरे विवाह के होम की अग्नि जला लेना चाहते हों!"

सुजाता ने पूछा, "मामला क्या है? कौन हैं ये सज्जन?"

क्षणिका ने उत्तर दिया, "जनाब का नाम है अजय कुमार बोस। सरकारी नौकरी करते हैं- कविता भी लिखते हैं। काव्यरस की मात्रा कुछ ज्यादा ही- "

सुजाता बोसी, "ऐसी बात है?"

क्षणिका की उत्तेजना तब भी कम नहीं हुई थी। वह बोलती रही, "मेरे विचार से तो कानून बनाकर ऐसी शादियों पर पाबन्दी लगा देनी चाहिए।"

सुजाता ने कुछ नहीं कहा।

सुजाता ने भले उस वक्त कुछ नहीं कहा, लेकिन इस मामले में अपना कानून ज्ञान उसने हाथों-हाथ दिखा दिया। महीने भर के बाद आयुष्मती सुजाता के साथ अजय बोस के शुभ विवाह का निमंत्रणपत्र परिचितों के बीच वितरित होने लगा।

सहेली का पति है। बातचीत तो होनी ही थी। एक दिन बातों-बातों में हँसते हुए क्षणिका ने अजयबाबू से कहा, "बचपन में आपने 'ट्राय-ट्राय अगेन' कविता अच्छी तरह से पढ़ी थी, क्यों?"

अजयबाबू बोले, "सो तो पढ़ी ही थी। इसके अलावे, पता है- पहली पत्नी की मृत्यु के बाद बड़े-बड़े लोग आकर दिन-रात अनुरोध करने लगे- क्या करता मैं बताईए। अपनी जरुरत तो खैर थी ही-"

क्षणिका ने विस्मित होकर पूछा, "बड़े-बड़े लोग मतलब?"

"यूँ समझिए, दो पत्नियों के स्वामी याज्ञवल्क्य से लेकर शेली, बायरन, मोपासाँ, रवीन्द्रनाथ, सबका समवेत अनुरोध; यहाँ तक कि हमारे सत्येन्द्र दत्त भी बोले-

कौन गया है कौन जायेगा और
इतना सब सोचने का
फुर्सत नहीं आज- नहीं है मित्र!

"और वो उमर खैय्याम- आपने जो शादी में उपहार दिया था- वे तो पीछे ही पड़ गये थे। अब जरा सोचकर देखिए, शराफत के साथ इतने सारे लोगों के अनुरोध का मान रखने के लिए मेरे-जैसे नाचीज के सामने शादी करने के अलावे और क्या चारा था?"

आरक्तिम-कर्णमूल होकर क्षणिका ने कहा, "बस-बस, रहने दीजिए। समझ गयी आपलोगों को।"

लेकिन अजय के सप्रतिभ, सरस उत्तर को मन-ही-मन उपभोग किये बिना वह नहीं रह सकी। बेशक, आदमी रसिक है- सुजाता सुखी रहेगी।

कुछ दिनों बाद सुनने में आया, सुजाता ने आत्महत्या कर ली है; और इसके भी कुछ दिनों बाद सुना गया, अजयबाबू फिर विवाह करने जा रहे हैं और इस बार क्षणिका खास्तगीर के साथ- 'लव मैरिज!'

***

23. तर्क और सपना

(तर्क ओ स्वप्न)

तर्क चल रहा था।

प्रथम तार्किक प्राणी कह रहा था, "मांस को पहले भूनकर फिर पकाने से सुस्वादु बनता है।"

दूसरे ने तुरन्त प्रतिवाद किया, "मांस को पहले भून लेने से उसका पकना कठिन हो जाता है। इसलिए पहले अच्छी तरह मांस को पकाकर फिर तरी को सूखाकर भुना-भुना-सा बना लेना अच्छा रहता है। तुम नहीं जानते।"

"मैं नहीं जानता! मांस को पहले भूनना ही चाहिए, मसाला भी भूनना चाहिए। पाक-प्रणाली में ऐसा लिखा है।"

"पाक-प्रणाली की बात रहने दो। बड़े-बड़े बावर्चियों के मुँह से मैंने सुना है, मांस को पहले पका- "

"पाक-प्रणाली की बात तुम नहीं मानना चाहते?"

"नहीं!"

"क्यों? कारण जान सकता हूँ?"

"कारण विभिन्न पाक-प्रणालियों के विभिन्न मत होते हैं। इसलिए बावर्ची- अर्थात् जो रोज मांस पकाते हैं- उनकी बात ही प्रामाण्य है।"

प्रथम तार्किक कुछ देर के लिए निरुत्तर हुआ, लेकिन तुरन्त उसकी बुद्धि खुली।

"सभी बावर्ची भी तो हमेशा एकमत नहीं होते हैं।"

"जो बावर्ची मांस पहले भूनना चाहते हैं, वे बावर्ची नहीं- बेवकूफ हैं। जापान में क्या करते हैं, पता भी है?"

प्रथम तार्किक का धैर्य चुक गया। वह बोला, "जापान-टापान मैं नहीं जानता। तुम बावर्ची का अपमान करने वाले कौन होते हो? अभद्र कहीं के!"

"क्या, जितना बड़ा मुँह नहीं, उतनी बड़ी बात! खुद तो दुनिया की कोई खबर नहीं रखेंगे और आ जायेंगे फदर-फदर करके तर्क करने! बेवकूफ!"

"फिर 'बेवकूफ' कहा?"

"बार-बार कहूँगा।"

"तो यह ले- "

"यह ले- "

तर्क युद्ध में परिणत हो गया।

अनतिदूर बैठा एक शृगाल इस तर्क प्रगति को उपभोग कर रहा था; दोनों को समरोन्मुख देखकर हँसकर बोला, "पुंगद्वय, तुमलोग तो दोनों ही निरामिषभोजी हो। आमिष विषयक तर्क में लिप्त होकर निरर्थक गोलमाल दंगा क्यों कर रहे हो? तुम्हारे प्रभु जाग गये, तो मुश्किल में पड़ जाओगे।"

शृगाल की बात दोनों ने नहीं सुनी। परस्पर सींग में सींग फँसाकर घोर नाद के साथ दोनों युद्ध करने लगे।

अचानक नीन्द से उठकर गाड़ीवान ने देखा, रात्रि के द्विप्रहर में उसके बलीवर्दयुगल आपस में लड़ रहे थे। ऐसी युद्ध प्रचेष्टाओं को शान्त करने के सदुपाय से वह अविदित नहीं था। देशज एवं प्राकृत भाषा का प्रचुर व्यवहार उसने किया। इसके बाद दोनों बैलों को पृथक कर दूर-दूर बाँधकर उपसँहार में उसने कहा, "खाओ सालों, खाओ चुपचाप- ज्यादा गुण्डई मत करो।"

खाने के लिए थोड़ा पुआल उसने डाल दिया।

अचानक मेरी भी नीन्द टूटी। स्वप्न भी। जो दो उग्र प्रकृति के युवक जापान-जर्मनी, हिटलर-मुसोलिनी प्रभृति विषयों को लेकर तर्क मुखर हो उठे थे, देखा- वे उतर गये थे। ट्रेन नाथनगर में खड़ी थी।

***

24. चलचित्र

(चलच्छवि)

सुन्दर सुसज्जित एक कक्ष।

एक युवती बैठकर सिलाई कर रही थी। कोने मे दूध-सी सफेद एक बिल्ली। सिलाई करने मे दिल नहीं लगा। प्यानो बजाकर गाना गाने लगी। यह भी अच्छा नहीं लगा। अन्त में टेबल पर रखे एक गुलदस्ते में फूल सजाने बैठ गयी। साथ ही गुनगुना भी रही थी। मैं मुग्ध हो गया। सोचने लगा- मेरे दिल की बात क्या कभी उस तक पहुँचेगी?

पता चला, अपने अनगिनत प्रेमियों में से दो को लेकर वह सम्प्रति उलझन में थी। एक था रईसजादा- चॉकलेटी नौजवान। रोज तरह-तरह के उपहार लेकर आता था। मोटर में घुमाने ले जाता था। युवती के पिता को इसमें आपत्तिजनक कुछ नहीं दिखता। कारण, वे चाहते थे कि यह चॉकलेटी लड़का ही उनका दामाद बने। उनकी स्वर्गीया पत्नी की भी यही इच्छा थी और मरते समय उनके किये इस अनुरोध की वजह से ही यह तन्वी रूपसी उस चॉकलेटी के साथ विवाह करने के लिए राजी हुई थी। मृत्युशैया पर पड़ी माँ की अन्तिम इच्छा का पालन भला कौन नहीं करना चाहता!

चॉकलेटी लड़का अच्छा ही था, पैसे वाला था, कुरूप भी नही था, स्वास्थ्य अच्छा ही था। लेकिन-! युवती ने हर तरफ से सोच कर देखा। 'लेकिन' का मामला रह ही जाता था। उस दिन बेकाबू घोड़े के सामने आकर अपनी जान को खतरे मे डाल कर जिस सुन्दर युवक ने उसे बचाया था, यह चॉकलेटी उसके जैसा बिल्कुल नहीं था।

उस नामगोत्रहीन दुस्साहसी युवक को वह समस्त नारी हृदय से चाहने लगी थी। चॉकलेटी लेकिन पीछे हटने वाला नहीं था।

युवती उसे भगा भी नहीं सकती थी। माँ की अन्तिम इच्छा थी। माँ की मृत्युछायाच्छन्न शीर्ण चेहरे की याद आ जाती थी। चॉकलेटी को कुछ कह भी नहीं सकती थी।

जबकि वह युवक! युवक का परिचय उसे मिल गया। वह एक जमीन्दार का साईस था। साईस था तो क्या, सुशिक्षित था। शेक्शपीयर से गॉल्सवर्दि, यहाँ तक की आर्लेन तक की खबर वह रखता था। विश्वविद्यालय का मेधावी छात्र था। देश का कर्णधार वह हो सकता था; सिर्फ किस्मत के दोष से वह आज एक

साईस मात्र था। सर्वोपरि, वह सुन्दर एवं सुपुरुष था। बलिष्ठ, सतेज, विद्रोही। भले ही मामूली साईस था, मगर चेहरे पर हँसी की दमक थी, आँखो में थी प्यार की चमक!

मैंने तो हार मान ली।

वास्तव में, एक तरफ वह चॉकलेटी और दूसरी तरफ सर्वगुणसम्पन्न साईस नौजवान- इनके बीच मेरे-जैसे नगण्य आदमी की भला क्या बिसात? अपने एकमात्र सम्बल छँटी हुई मूँछों पर हाथ फेरते हुए मैं सोच में डूब गया।

ऐन मौके पर एक घटना घट गयी। अब तक युवती और साईस शहर के बाहर जो पुल था, वहाँ शाम को गुप्त रुप से दो-एक बार मिल चुके थे। एक दिन चुम्बन-विनिमय भी हुआ था; लेकिन उस दिन जो घटना घटी, वह सचमुच रोमांचक थी।

गहन रात्रि। साईस युवक एक विशाल घोड़े पर चढ़कर हाजिर। ब्राऊन रंग का विशालकाय घोड़ा। गर्दन टेढ़ी कर दौड़ता हुआ आया।

युवती के घर के बाहर एक सीटी बजाते ही युवती घर से निकल कर बाहर आ गयी। क्षणभर के लिए उसकी माँ का अन्तिम चेहरा उसके स्मृतिपटल पर कौंधा, मगर यह क्षणभर के लिए ही था। उसी समय साईस ने उसे घोड़े की पीठ पर बैठा लिया। इसके बाद-

खटमट- खटमट- खटमट-

घोड़े की टापों की आवाज के साथ ही मेरा भी रक्त मानो उबलने लगा।

थोड़ी देर के बाद चॉकलेटी को भी खबर लगी। जब वह सही में यह समझ गया कि उसकी प्रेयसी प्रणय-शृँखला को काटकर भाग गयी है, तब उसके चेहरे का भाव देखने लायक था। प्रताड़ित चॉकलेटी, उन्मत्त चॉकलेटी! उफ्फ, क्या चेहरा था! गाड़ी लेकर बाहर निकलते ही एक वृद्धा ने उसे बता दिया कि किस रास्ते से वे लोग गये हैं। प्रकाण्ड 'रॉल्स रॉयस' उसी रास्ते पर दौड़ गयी। उद्भ्रान्त चॉकलेटी 'स्टीयरिंग' पकड़कर बैठा था। तीस, चालीस, पचास- गाड़ी की रफ्तार बढ़ती जा रही थी। सर के बाल हवा में लहरा रहे थे।

क्या प्राणान्तक अनुधावन था यह! नक्षत्र वेग से घोड़ा मैदान, जंगल, पर्वतों से गुजरता जा रहा था; विद्युत वेग से चॉकलेटी अनुसरण कर रहा था। प्रायः पकड़ने ही वाला था कि ऐन मौके पर सामने एक नदी! एक छलाँग में अश्व

नदी को पार कर गया। चॉकलेटी का रॉल्स-रॉयस नहीं सका। स्टीयरिंग छोड़कर आक्रोश में चॉकलेटी ने दोनों हाथों से अपने सर के बाल पकड़ लिये।

छपाक!

चॉकलेटी पानी में कूद पड़ा, लेकिन तैरना उसे नहीं आता था। तेज धार वाली पहाड़ी नदी। भीषण बहाव। प्राणपण से चेष्टा करने लगा वह। वह आसानी से नहीं छोड़ेगा। नाक-मुँह से पानी पीते हुए डूबने-उतराने का अति हो गया। फिर भी नहीं छोड़ेगा वह। क्या ही अमानुषिक 'आप्राण' चेष्टा थी! इसे ही कहते हैं प्यार! समस्त आत्मा, समस्त सत्ता देकर चॉकलेटी उस पार जाना चाहता था।

प्रियतमा जो उसपार आततायी के हाथों में कैद थी!

चॉकलेटी से अब नहीं हो पा रहा था। होश खो रहा था। हाथ-पैर क्लान्त, अवसन्न हो रहे थे। सर्वांग शिथिल हो आया। चॉकलेटी शायद डूब गया!

इसी समय उस पार एक पहाड़ी की चोटी पर खड़े होकर साईस युवक तथा युवती आकाश की ओर देख रहे थे- बादलों को भेदकर चाँद उग रहा था।

अचानक साईस की नजर पड़ी, नीचे नदी में कोई डूब रहा था। संगिनी से बोला, "देखो, कोई डूब रहा है। उसे बचाता हूँ।"

युवती बोली, "लेकिन वह चॉकलेटी है।"

साईस कोई साधारण इन्सान नहीं था। महामानव था वह तो! हँसकर बोला, "यह मैं जानता हूँ; चॉकलेटी है तो क्या, है तो वह मनुष्य ही न! वह डूबेगा और मैं खड़ा देखता रहूँगा! ऐसा नहीं हो सकता।" घोड़े पर चढ़कर तीर वेग से वह नीचे उतर गया।

कुछ देर बाद देखा गया, चॉकलेटी के शरीर को कन्धे पर रखकर साईस पहाड़ की चढ़ाई चढ़ रहा था। बेहोश, भारी-भरकम, भींगे हुए चॉकलेटी को लेकर पहाड़ पर चढ़ना! कितना कष्टकर था! साईस के चेहरे पर देवताओं की दीप्ति थी- शरीर में दैत्य का बल!

घोड़ा मंत्रमुग्ध-सा पीछे-पीछे चल रहा था।

इसके बाद दोनों ने मिलकर चॉकलेटी की क्या सेवा की! साईस अपने एकमात्र कम्बल में उसे लपेट कर खुद ठण्ड में पड़ा रहा।

युवती ने इसपर कहा, "प्रियतम, तुम साईस नहीं, तुम देवता हो।"

कम्बल के अन्दर से चॉकलेटी ने कहा, "सही कह रही हो। लेकिन इस वक्त सो जाओ।"

सोये-सोये युवती स्वप्न देख रही थी। उसकी माँ कह रही है- "बेटी, तुम योग्यतम से ही विवाह करो- यही मेरी पुनश्च इच्छा है।"

नीन्द से जागकर युवती ने देखा, सामने एक वृक्ष की डाल पर एक जोड़ा कपोत-कपोती एक-दूसरे की चोंच से चोंच मिला रहे थे। करवट बदलकर उसने देखा, चॉकलेटी जागकर बैठा हुआ था। चॉकलेटी ने आवेग के साथ कहा, "देखो, तुम इस साईस के ही उपयुक्त हो। मुझे सिर्फ नदी पार करवा दो। ईश्वर तुम दोनों को सुखी रखे।"

युवती ने कहा, "धन्यवाद। आपको वे अवश्य ही नदी पार करा देंगे। उन्हें जगाईए।"

चॉकलेटी ने देखा, थोड़ी ही दूरी पर साईस गहरी नीन्द में सो रहा था। पुकारा, कोई उत्तर नहीं। हिलाया, कोई उत्तर नहीं। साईस बुखार से बेहोश हो रहा था।

और कोई रास्ता न देख चॉकलेटी अकेले ही पहाड़ से उतरने लगा। कपड़े उस वक्त भी भींगे हुए थे, सारा शरीर कीचड़ से लथपथ था, चेहरे पर थी निराशा।

हताश प्रणयी चॉकलेटी का वह क्या ही करूण अवरोहण था!

फिल्म समाप्त हो गयी। रास्ते पर चलते-चलते सीने के अन्दर कैसी एक टीस-सी उभरने लगी। और क्या करता! अन्त में, अधजली बीड़ी को कान से निकाल कर सुलगा लिया।

***